ज़िंदगी की राहें

‘हर मोड़ पर एक एहसास’

दयानन्द कुमार

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dayanand Kumar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-595-3

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: May 2026

Dedication

(Optional: A short note dedicating your book to someone special.)

Introduction

(Write a brief introduction about your poetry collection, its theme, and what inspired you to write these poems.)

अनुक्रमणिका

नफरत के बाज़ार में बिकती इंसानियत 1

पथिक का मृगतृष्णा 2

बिकने को तैयार हूँ... 4

युद्ध का कटु सत्य 6

नाटक राजनीति का 9

न्याय की पुकार.. 11

मसान की पुकार... 13

समाचार... 14

राम की त्यागभूमि 15

भूख, बेबसी और बेमानी बहस.. 17

अविरल सौंदर्य 18

कमाल का बचपन... 19

You aur tum 21

भजन – हर हर महादेव 22

पथिक तेरा रास्ता 23

परछाइयों के उस पार.. 25

कौन कितना बोझ उठाए रखता है 26

हरे रंग के ख़्वाब 28

आज़ादी.. 29

गुलामी 31

मोह और मार्ग..33
मानव और प्रकृति का संवाद...35
कटी पतंग...37
भीड़ का सच...39
जीवन धारा..40
About the Author 42
Acknowledgments 43

नफरत के बाज़ार में बिकती इंसानियत

चौक चौराहो पर जीतनी थी
महापुरुषों की प्रतिमाएं सब पात दी गयीं है
आपस में थे जो भाई भाई
सबको बाट दी गयीं है
कभी एक दूसरे के लिए, जो देते थे जान भी
आज उन्हें जातियों में बाट दी गयीं है

हर नुक्कड़, गली, मुहल्लों, और चौरस्ते पर होर्डिंग
घर की किवाड़ों और दरवाजो पर पोस्टर साट दी गयीं है
मंदिर मस्जिद और गुरुद्वारों पे रोज की भांति
अब अजाने नहीं सुनाई देंती
नफरत के बाजार में इंसानियत को दीमक चाट गयीं है

ये चंद से लोग है, जो अब भी हुंकार भर रहे हैं l
वर्ना कुछ ने तो इंसान के भेष में नरकंकाल ओढ़ रक्खी है
सुना है कुछ लोग मिठाइयां लेकर घूम रहें हैं दर बदर
ये वही लोग है जो ठण्ड में उठा के ले भागे थे चादर l
कहानी सब सुना रहें है उसकी बहादुरी के
हकीकत ये है की वो कभी हुए ना किसी के

पथिक का मृगतृष्णा

मृगतृष्णा में घूमता,
कच्ची नींदों में ऊंघता।
कुछ पाने की होड़ में,
क्या पाना है इस कोढ़ में?
बरबस पैरों से चला जा रहा,
मैं पथिक बन बढ़ा जा रहा।
पांडव ने झेले वो तेरह बरस,
पानी-पानी को गए तरस।
राम के वो चौदह बरस,
बीत गए वो यूँ ही अनायास।
वनवासी बनकर फिरते रहे,
हर बाधा में वो घिरते रहे।
दोनों में था बस एक अंतर,
अपने ही रह गए दुश्मन बनकर।
एक ने असुरों का संहार किया,
जो फँस गए, उन्हें तार दिया।
दूजे ने प्रतिशोध को पाल रखा,
एक-एक पीड़ा को संभाल रखा।
प्रतिशोध की ज्वाला में,
जब आ गए पांडव उजाला में।
अपने प्राणों को कर के याद,
कर दिए अपने ही कुल को बर्बाद।
कौरव-पांडव की बात नहीं,

ना ही मैं राम बनने आया हूँ।
आधा जीवन भी बीत गया,
पर खुद को ना ढूँढ पाया हूँ।
है खीज नहीं बीते पल का,
ना पाने की कोई आस है।
बस समय जैसे भी बीत जाए,
जीवन जैसे अनायास है।
ना मोक्ष मुझे है पाने की,
ना समय खामोश बिताने की।
ना ही मंज़िल की है चाह मुझे,
ना ही ऊँचे महल बनाने की।
दर-दर की चौखट को चूमता,
बंजारों सा मैं घूमता।
अपनी ही नज़रों में गिर रहा हूँ,
मेरा विश्वास अब टूट रहा हूँ।

बिकने को तैयार हूँ

ना टोकरी है ना काम है
बस ऊँचा मेरा नाम है
कहने को तो मैं सूट बूट में
पर बेरोज़गारों में मेरा नाम है।
ना सर पर पगड़ी पहनी है
ना कंधों पे अंगोछा है
डिग्री धारण कर ली मैंने
बस यहीं बड़ा लोचा है।
पढ़ा लिखा हूँ
टैलेंट का भरमार हूँ
कोई बिज़नेस कर नहीं सकता
सामाजिक वैल्यू से लाचार हूँ।
अपना सीवी लेकर मैं
बिच बाज़ार में आया हूँ
जो भी मुझको आता है
वो सब कुछ लिख कर लाया हूँ।
बारी बारी सब कोई देखो
मैं बिलकुल तैयार हूँ
मुँह माँगी बोल बिकूँगा
बिकने को तैयार हूँ
मैं बिकने को तैयार हूँ।
मुझको मालूम है
तेरी हर पॉलिसी झूठा है

सांत्वना दे-दे के तुमने
सिर्फ हम लोगों को लूटा है।
ऊफ़ तलक तक मैं ना करूँगा
जब तक ख़ुश मेरा परिवार है
ज़िम्मेदारी का बोझ बढ़ा है
तो तेरा जूता लात भी स्वीकार है।
हमने अपनी सम्मान को बेचा
जिस दिन अपनी ज़मीन को छोड़ दिया
नब्बे रुपया भारी पड़ गए
धोती से जबसे नाता तोड़ दिया।
आँख पे चश्मा
लकीरें हैं ललाट पर
अब तो आँसू घूँट जाता हूँ
तेरी हर एक बात पर।
ये सब का अनुभव लेकर
तेरी गली में आया हूँ
कड़ी मेहनत से काम करूँगा
जैसे करता आया हूँ।
जब तुम चाहो बाहर कर दो
जब समझो मैं बेकार हूँ
जी हाँ जी हाँ, सीवी लेकर मैं खड़ा हूँ
बिकने को तैयार हूँ।

युद्ध का कटु सत्य

पहले ही कहानी गढ़ी गई,
फिर जाकर यह युद्ध लड़ी गई।
शतरंज का खेल फिर शुरू हुआ,
तब जाकर सबमें युद्ध हुआ।
राजा और सैनिक अनेक हुए,
मृत्यु शय्या पर एक हुए।
प्रतिशोध की ज्वाला भड़क गई,
आग में घी भी छिड़क दी गई।
दोनों में फिर प्रतिद्वंद्व हुआ,
तलवार-धनुष का द्वंद्व हुआ।

लहू की नदियाँ बह गईं,
जो जीते, बस साँसें रह गईं।
न जाने कैसा शोर हुआ,
सन्नाटे में पसरा भोर हुआ।
बधिर होंठ अब मौन पड़ा,
आँखें पथराई, देख सुन पड़ा।
एक काली स्याही लिख डाली,
अनहोनी को भी कर डाली।

अब नयन नीर बहाते हैं,
यह सोचकर बस पछताते हैं।
है कौन मरा, है कौन बचा,

जाने यह किसने चक्रव्यूह रचा?
मरने वाले भी अपने थे,
मारने वाले भी अपने थे।
फिर पता नहीं क्यों युद्ध हुआ,
जबकि सभी यहाँ प्रबुद्ध हुआ।
भाई को भाई मार रहा,
साग-सब्जी के जैसे कट रहा।
उन घावों पर मरहम लगाते हैं,
क्यों हुआ यह, अब बताते हैं।
माना कि सबमें था तेज़ बहुत,
पर ज़्यादा हो गया क्रोध बहुत।
तिनका-तिनका जो बनाया था घर,
अब अलग हुए सब एक एक कर ।
समय का चक्र चला ऐसा,
जो राजा थे, अब रंक हुए जैसा।
नहीं बोध रही अपने मन में,
अब बिखर गए हैं सब सपने।

न जाने कौन अब आएगा,
फिर से यह महल बनाएगा।
जिस ख़ातिर यह सब रचा गया,
अब भोगने को कुछ न बच पाया।
अब अंतिम पग बढ़ाते हैं,
मृत्यु शय्या पर लेट जाते हैं।
अब आँखें बंद करने को,
सब से नाता अब तोड़ने को।

अब हम तो विदाई लेते हैं,
जग जीते, सब जीते रहे।
हम अंतिम प्रणाम करते हैं।

नाटक राजनीति का

जो जितना हो सके फेंक रहे,
अपनी राजनीति रोटी सेंक रहे।
चमचे, गधे से जनता है परेशान,
गलती करके वो बने नादान।

भक्ति, शक्ति अब बनी गाली,
राजनीति हो गई गंदी नाली।
नाली की बजबज से सब हैरान,
पर खुद को समझे बड़ा बलवान।

मुख में राम, बगल में छुरी,
ना जाने कैसी है ये मजबूरी।
सच को झूठ ये बता रहे,
बिना आभार के जता रहे।

मंच पे प्रपंच सदा करते,
पीछे से छल सदा करते।
माल भरे सब इनके भंडार,
पर जनता भूखी रहे बेकार।

जुमलों की करते रहे बारिश,
सत्ता की हवस इनकी खुवाईश।
बड़े बड़े वादे इनके
पर सेवा की ना हो गुंजाइश

जनता पूछे सवाल हजार,
मिले न उत्तर, बढ़े तकरार।
आशाओं का दीप बुझा दिया,
फिर भी खुद को मसीहा बना लिया।

अब वक्त है इनसे लड़ने का,
सच की राह पकड़ने का।
जो छल करें, उन्हें पहचानो,
झूठे मुखौटे को अब ना मानो ।

न्याय की पुकार

बंगाल भी अब लगा जलने ,
एक घृणित ऐसा केस हुआ।
भीड़ के दरिंदों ने घेरा,
इंसानियत का हेस नेश हुआ।

अपँग बनि दुनिआ सारी
कैसी यह फैली महामारी?
मानव मानव को नोच रहा,
दोषी बन बैठे दरबारी।

देखो मिडिया की वयभिचारी
न जाने मति गयी मारी
झूठ का व्यापार सजा है।
हर दिन नया प्रपंच रचा है।

नेता सब देखो मौन खड़े,
गूंगी जनता कौन सुने?
आवाज़ बुलंद करो अपना,
ताकि न्याय ना बने सपना !

पहले बांग्लादेश जला था,
अब बंगाल भी जल रहा।
वहाँ तो थी सियासत की जंग,
पर यहाँ कौन ये खेल रहा?

यह देख देख दिल रोता है
आगे देखे क्या होता है ?
कोई तो लाज बचाने आएगा
सुदर्शन संग ले आएगा।

दुःशासन के ये काले पंजे,
कब तक यूँ रक्त बहाएँगे?
अब दरिंदों का नाश करेंगे,
न्याय का दीप जलाएँगे।

मसान की पुकार

जलती रही मसान रात भर
लेकर हमें अपने आगोश में
धु धु कर जलता रहा
देखता रहा खामोश मैं

है चिंगारी मेरे सिने की
लपटे बनकर धूमिल हुआ
बन कर पानी लहू मेरे
देह देखते कुनील हुआ

आंखे भी पथरा गयी
यह देख के मंजर सहम गया
क्या अपना क्या पराया कोई
खंजर डाला तो वहम गया

थी आस जिनसे उदास हुई
यह घटना भी आस पास हुई।
जलता रहा धु धु कर
तब जाकर उन्हें विस्वास हुई।

टक टकी लगा कर देखता
करता रहा इंतजार मैं।
आँखें भी पथरा गयी
अपनी सांसों की झंकार में।

समाचार

क्या समाचार पढ़ के
खुद को भूल जायूँ मैं
जो आग लगी है
इस जग में कूद जायूँ मैं

जहर घुल रही फिजा में
अब जीना भी दुस्वार हुआ
आस्तीन में है सांप पल रहे
मदद भी अत्याचार हुआ

चिकनी चुपड़ी बातों में
देखो कैसे भरमाते हैं
पहले तो इलू इलू करते है
फिर डंडो से पिटवाते हैं

बात फ़तेह की करो तो
न जाने क्यों बदनाम हुआ
अच्छा खासा नेकदिल था
इज्जत अब निलाम हुआ

किसी का झगड़ा किसी का प्रेम
बिना काम के मिले हैं फ्रेम
क्या चिकनी चुपड़ी बातों में
घुल जाऊँ मैं

राम की त्यागभूमि

सारी गलती राम की है,
जो अयोध्या धाम को माना,
अपने से पहले उठ कर,
पहले अपने ग्राम को जाना।

जिसने राम को राम बनाया,
अयोध्या उनको कहीं न छोड़ा,
राम तो राम बन गए, पर
अबध न फिर कभी अपने से जोड़ा।

कभी तो राज-पाट है छीना,
कर दिया जिसने मुश्किल जीना,
भेज के वन पुरसोत्तम को,
ना आया मस्तक पर पसीना।

सभी खुशहाल थे परन्तु,
महिमा किसी ने ना जाना,
भगवन साथ सदा रहते है
पर कोई कभी नहीं पहचाना

सबकी खुशियों की खातिर,
जन-जन में घूमते रहे श्रीराम।
राज पाट खुशियों को छोड़ कर
बन में किये बिसराम

कभी धोबी कभी कुड़बा
बनकर देती रही है धोका
हमेशा पावं खिंच लिया
की पाए जब कभी मौका l

युग बदला, दिवस बदला,
बदल गया संसार है,
पर अयोध्या कभी न बदली,
पहले भी धोखा बाज थी,
आज भी धोखेबाज है।

भूख, बेबसी और बेमानी बहस

तुम्हारी टोकरी, तुम्हारी नौकरी,
ये बहस बस तुम से है।
ये नाकामी, ये परेशानी,
तहस नहस बस तुमसे है।

आए थे जीवन सुलझाने,
अब उलझन बनकर रह गए,
रीढ़ की हड्डी बनना चाहा,
कंकाल बनकर ढह गए।

भूखा पेट, खाली प्लेट,
जीने की जिद आसान नहीं,
पूस की नरमी, जून की गर्मी,
दोपहर की धूप भी आम नहीं।

जब हो खाने के लाले,
और पीने को न हों प्याले,
हमेशा आफत गले आ पड़ती है,
भला इस घड़ी में कैसे कोई नफरत को पाले?

ये है सियासत रोटी की ,
ना भूख की कोई मजहब है ,
जो भर दे पेट गरीबों का ,
वही खुदा है वो रब है।

अविरल सौंदर्य

वन–उपवन सब लगे मनोहर,
सुंदर तेरी माया है।
पथ पथरीले, बहती नदियाँ,
ये सब तेरी काया है।
कल, कल, करती अविरल धारा,
राग मधुर सुनाती है।
मंद-मंद बहती पुरवाई,
खुशबू लेकर आती है।
खड़ा हिमखंड हिमालय है,
गंगोत्री का यह उद्गम है।
धरा, समुंदर, अग्नि, वायु—
अद्भुत तेरा संगम है।
वन-मयूर बस नाचे मन में,
देख तेरी सुंदरता को।
पल-पल तेरी जयकार करें हम,
समाहित अविरलता को।

कमाल का बचपन

कमाल का बचपन
एक कदम का डाल पे
जब सबने डाली झूला
बारी बारी झूले सब मिल
जब तक ना टुटा झूला
कोई घर से रस्सी लाया
कोई लाया झूला
हर कोई का काम था अपना
पर कोई कभी ना भूला
भूली बिसरी यादों में
अब हम यूँ ही खो जाते हैं
बचपन के सुहाने सपने
हर पल याद आतें हैं

कदम के निचे रहे तालाव्
ठंडी में जलता अलाव्
फिर होती हम सब की पार्टी
पार्टी में बने खीर पुलाव
लिट्टी कि पार्टी चल जाती
अब वो दिन कभी नहीं है आती
बचपन की वो पार्टी प्यारी
अब कंधो पर है जिम्मेदारी
अब जिम्मेदार हो गए

पार्टी भी ना कर पाते हैं
इतने तो बेकार हो गए
बचपन की थी यही कहानी
जब तक चला वो झूला
जब से हुए सयाने तो
सब कुछ हमने भूला

You aur tum

मुझे ना यु नहीं बल्कि तू कहा कर,
कम से कम अपना तो लगता है।
रहते हैं साथ-साथ पर,
साथ सपना-सा लगता है।

रास नहीं आता अब तेरे बुलाने में,
बड़ा सुकून थी यार तेरे बचकाने में।
पुकारता है जब यूँ, तब झेंप जाता हूँ,
शिष्टाचार की बोली सुनाई देती तराने में।

You की संज्ञा है बाहर की,
यह बाहर-सा लगता है।
तू-तू मैं मैं करता तो,
तू सायर सा लगता है।

You की भाषा नहीं सुहाती,
बस नाम से पुकारो तुम।
You के बदले तू कह डालो,
ज़्यादा बहम न पालो तुम।

भजन - हर हर महादेव

(धुन: डमरु और मृदंग की ताल पर)
त्रिनेत्र खोलकर, बम बम बम बम बोलकर
डमरु की ध्वनि बजे, हर दिशा झूमे
त्रिजटा खोलकर, शंखनाद करके चले
पग की धमक से सारा जगन घूमे ॥

🔔 हर हर महादेव… हर हर महादेव ॥
शून्य में जो बिराजे, घर-वार सब त्यागे
ओंकार की धुन सुन, भक्तों को संभाले
आग-सी जब धधकी, त्रिनेत्र खोलकर
भक्तों की रक्षा को, भोलेनाथ आ गए ॥

🔔 हर हर महादेव… हर हर महादेव ॥
सृष्टि हिल उठी सारी, गूँजी महिमा भारी
दुख हरते महाकाल, रक्षा करो त्रिपुरारी
बम बम बम की गूँज, शिवशक्ति का वरदान
जपते हैं सब मिलकर, हर हर शिव भगवान ॥

🔔 हर हर महादेव… हर हर महादेव ॥

पथिक तेरा रास्ता

पथिक तेरा रास्ता ना है कोई मंज़िल
तू चलता चल चल बारे हो न्यारे
तेरी ही है भूमि तेरी ही है अम्बर
तेरा ही ये दुनिया तू दुनिया का तारे

तू पहिया समय का
तू है एक मुसाफिर
ना है कोई बाधा
ना है कोई अड़चन

पथिक तेरा रास्ता ना है कोई मंज़िल
तू चलता चल चल बारे हो न्यारे

घूमे तू ये दुनिया ये दुनिया है प्यारी
न कोई कर्ज़ है नहीं कोई हिस्सेदारी
अपनी जिंदगी का तू अब हुआ रहनुमा रे
ये है तेरी दुनिया तू दुनिया का तारे

बंधन है ऐसा पथिक रास्ता का
ना है कोई मंज़िल नाही कोई किनारे

तू बहता चला पानी की तरह
न कोई बाधा न कोई दरारे
तू मन का मुसाफिर न बन तू परिंदा
तू चलता चलता जब तक है ज़िंदा

मिलेगा वो जिस दिन है तेरा किनारा
ना होगी कोई मंज़िल ना का कोई सहारा
किस्मत है तेरी तू चलता चल
मिलेगी ये मंज़िल जब मिलेगा किनारा

परछाइयों के उस पार

दूर कहीं आसमान से मैं गिरता रहा,
न मंज़िल की तलाश में, बेवजह फिरता रहा।
हवाओं ने पूछा मुझसे, ठिकाना है कहाँ,
मैं खामोशियों के शहर में ही बसता रहा।

रौशनी की चाह में अँधेरों को ओढ़े,
अपनी ही परछाइयों से मैं डरता रहा।
ख्वाब टूटते रहे शीशे की तरह राहों में,
हर किरच को दिल में चुपचाप धरता रहा।

लोग मिलते रहे कारवाँ बनकर राह में,
मैं भीड़ के बीच खुद को ही खोता रहा।
न जीत की खुशी, न हार का ग़म,
बस वक़्त की धूल में चेहरा ढँकता रहा।

एक दिन थककर रुक गया जब सफ़र में,
तब जाना—मैं खुद से ही बिछड़ता रहा।

कौन कितना बोझ उठाए रखता है

कौन कितना बोझ उठाए रखता है,
गाँव की पगडंडियों पर ना जाने
वो क्यों अब भी रास्ता तकता है।
धूल भरी उन राहों में,
उसकी परछाईं आज भी भटकता है।
कौन कितना बोझ उठाए रखता है,

न जाने क्यों वह यह बोझ उठाए रखता है,
किस अपराध की सज़ा स्वयं को देता है?
चला गया वह राहें अधूरी छोड़कर,
बिना कुछ कहे, बिना कुछ मोड़कर।

क्या ख़ता हुई थी इतनी बड़ी,
कि पीछे मुड़कर भी न देखा?
रह गया आँगन सूना-सूना,
दीपक ने भी जलना छोड़ दिया।

वो आशियाँ जो तिनकों से सजाया था,
सपनों की मिट्टी से गढ़ाया था,
आज हवाओं में बिखर गया—
तिनका-तिनका बिखरकर रोया।

आँखें अब पत्थर-सी हो गई हैं,
आंसू भी बहना भूल गए।

साँझ की लालिमा ओझल हो गई,
सपनों के रंग भी धूल गए।

एक बवंडर-सा चला था झोंका,
झोंके संग आया एक मौका।
पर वक्त की उस तीखी आँधी ने
सब कुछ पल में छीन लिया।
अब भी वो पथ को निहारता है,
शायद कोई आहट सुनने को।
पर सवाल वही अनुत्तरित है—
कौन कितना बोझ उठाए रखता है…

हरे रंग के ख़्वाब

हरे रंग के ख़्वाब सजाए,
वो हसीन जो सपने थे।
तिन-तिन कर जोड़ा था आशियाँ,
उसे तोडा जो अपने थे।

रंग गिलहरी के हाथों में,
जो मूँगफली के दाने थे।
पर कोई बंदर उड़ा ले गया,
गिरगिट-सा रंग बदलते बिलकुल बड़े सयाने थे।

हँसती-खेलती ज़िंदगी एक दिन,
देखो कैसे लाचार हुई।
कौड़ी के दाम में गुर्दे बिके,
ज़िंदगी यूँ ही बेकार हुई।

कभी भी कोई भेद किसी का,
सरेआम मत ऐलान करो।
कुछ रखने और करने से पहले,
पहले अपने मन में विचार करो।

आज़ादी

अपनों में अपनों का होना,
सोने को मिले एक बिछौना,
यही तो है आज़ादी का होना।
मिले सभी से हर एक बार,
मिलना चाहे बारंबार,
चाहे जितने काँटे हों यार,
होने दो मुश्किल हज़ार,
मुश्किल में भी साथी का होना,
छोटी-छोटी खुशियों का कोना,
यही तो है आज़ादी का होना।
मिलकर पत्थर दूर करें हम,
थोड़ी राह साथ चलें हम,
मिटा के सारे शिकवे और ग़म,
पत्थर की एक नींव बनें हम,
समझे न कोई हमें खिलौना,
किसी की नज़रों में न हो बौना,
यही तो है आज़ादी का होना।
चाहे जितनी दूर चलें हम,
बिछड़कर भी न बिछड़ें हम,
रोज़ तराने यूँ ही गाएँ,
मंद-मंद मुस्कान बहाएँ,
छोटी-छोटी खुशियों का
हम अपना आशियाँ बनाएँ,

छोटी-छोटी खुशियों में तेरा होना,
प्यार की एक बीज का बोना,
यही तो है आज़ादी का होना।

गुलामी

गुलामी के बंधन टूट गए,
पर हँसता बचपन छूट गया।
घूमने का मिला नया अवसर,
पर लौट के घर न जाएँ पर।
कहते थे जिसे गुलामी हम,
पर स्वर्ग से कभी भी न था कम।
एक आवाज़ पर घर को उठाता था,
छोटी-छोटी बातों पर अक्सर रूठ जाता था।
गुलामी की ऐसी दास्तान थी वो,
जैसे हम ही वहाँ के राजा हों।
जहाँ हुक्म सभी वो मेरे थे,
दिन-रात मेरे और मेरे ही सवेरे थे।
दो बीती पगडंडी पर जब,
सरपट दौड़ लगाता था।
ऊबड़-खाबड़ उन राहों पर,
सिक-चक्की को दौड़ाता था।
अब दौड़ने को मिला है खुला संसार,
पर एक कदम भी न होता पार।
किसे कहते हैं गुलामी,
अब समझ में आया है।
हाथ-पाँव तो खोल दिए,
पर मन पर अंकुश लगाया है।
धन रूपी सोने के पिंजरे को,

हम उसमें जा के बैठे हैं।
जकड़ रही गुलामी की बेड़ी,
सब मुँह फेर के बैठे हैं।
न आज़ादी की कोई राह दिखे,
हर कोई दो कौड़ी में बिके।
रहना भी है इसी गुलामी में,
जिसे लोग फ़र्ज़ी आज़ादी कहें।

मोह और मार्ग

देख पथिक तू अचंभित-सा
भाव तेरे क्यों व्याकुल हैं
मृत्युंजय का है खेल रचा
मरने को सब कोई आकुल हैं
मोह रूपी इस काया के
भाव बहुत बहुतेरे हैं
मृत्यु सय्या पे नाच रही
ये रिश्ते तेरे मेरे हैं
है पंथ बढ़ा तू राह पकड़
बस कुछ भी न तू दिखा अकड़
सच्चाई तेरी है निष्ठुर
बस मौन ताकता है ठिठुर
देख पथिक तू मौन खड़ा
राहों पे सब बिछिप्त पड़ा
अभी तो बस अंगड़ाई है
ये धुंध अंधेरा छाई है
विपदा की इस बेला में
हिम्मत की लड़ाई है
ले बाँध कमर हो जा तैयार
कोई न छूटे अबकी बार
कर दृढ़ निश्चय तू बढ़ आगे
रिश्तों के बंधन गढ़ आगे
तू मनुष्य नहीं मसीहा बन

तेरे गाएँ हम कीर्तन
क्यों तू है विचलित खड़ा
क्यों सोचे है तू खड़ा-खड़ा
हरि तू सबके कष्ट हरो
इस विपदा से अब दूर करो
हे प्रभु तेरे बंदन हैं
इस दुविधा से अब दूर करो

मानव और प्रकृति का संवाद

खड़ा हिमालय ये कह रहा
धरती की टंकार सुनो
सुनायी देती है बस करुणा
मानव का अहंकार सुनो
गण की गर्जन मन की तर्पण
आत्मा का धिक्कार सुनो
बहुत हो गई झूठी गरजना
प्रकृति की प्रतिकार सुनो
रथ पे खड़ा है मौत महाजन
करुणा की चित्कार सुनो
है बंदिश में मानव रचना
चक्रव्यूह की मार सुनो
तख्त पे बैठा चित्रगुप्त है
काल ने चक्र घुमाया है
करनी थी तुमको जो मानव
अंत काल अब आया है
बारी-बारी मिनती आती
कर्णभेदी पुकार सुनो
अपनी-अपनी बारी आती
सांसों का चित्कार सुनो
मानव माया का है सागर
भटका हुआ तू राही है
लिखा हुआ है तू एक रचना

खाली पड़ी सियाही है
रची हुई दुनिया की
शापित भय की मार सुनो
सबसे अच्छे से रहना
उत्तम सा व्यवहार चुनो

कटी पतंग

काटा हुआ हूँ धागे से और उड़ने को है अनंत आकाश
पर अब ना कोई अपना है ना कोई मेरे आस पास
इस गगन के बादल का तो बस ऐसे ही आना-जाना है
बारिश की बूंद भी जैसे लगता अब बेगाना है

भीग रहा हूँ बारिश में
अब कोई तो पहचान ले
दूर बहुत मैं चला आया हूँ
कोई तो अब थाम लो

झोंके हवा के जैसे
धूल को लेकर आते हैं
मनो मेरा अब कोई नहीं हो
ऐसे वो बतलाते हैं

रह गई ठेहुनि, फंस गया डोर
देखे इन कोई तोड़ मरोड़
मेरी इन तकलीफों का ना
कोई अंत है ना कोई छोर

पड़ा हूँ ऐसी फिजाओं में
ना जाने जाऊँ अब किस ओर

जब धागे से बंधा था मैं
हर मुश्किल से लड़ा था मैं

भूल के अपनी दायरे को
समझ रहा था बड़ा हूँ मैं

अब धागे से टूट गया
तो हर कोई मुझसे रूठ गया

मुझको मेरी बातों से ही
हंसता बचपन छूट गया

बिना पंख के उड़ने वाले
तुमको ये बतलाता हूँ
मैं भी तेरे जैसा ही हूँ
अब देखो हकलाता हूँ

मेरी भी कोई हस्ती थी
जब धागे से जुड़ा था मैं
मेरी भी थे खेल खिलौने
जब देखो कैसे पड़ा हूँ मैं

भीड़ का सच

हे धरा यह देख ये कैसी भीड़ बढ़ा
सूरज माथे पे है सीध खड़ा
न शीश तेरी यूं झुक जाए
बस बेरंग हो देखो लोट पड़ा

मानव जीवन की रेखा है
ऐसा अभी तक न देखा है
लोग बाग अब मौन पड़े
बस न जाने क्यों ये गौण पड़े

बहुत लोग जब मिले यहाँ
लोगों की देखो अब भीड़ बढ़ी
भीड़ को सकल बना कर ये
न जाने क्या तकदीर बनी

झुंड का झुंड निकालते लोग
झुंड की भीड़ में पलटते लोग
न समय रही न समय बचा
अपनी बदहाली पे भी
कभी नहीं संभलते लोग

जीवन धारा

हे जल धारा जीवन का
तुम मस्त मगन बहार बहो
दिल की बातें तुम समझो
सदा ही जय जयकार करो

हे अद्भुत जीवन नैया की
तुम मस्त कवि की कहानी हो
जलना ही तो दीपक बनकर
नहीं तो शीतल पानी हो

पानी की नौका में व्याकुल
जब लहर से लाचार हुआ
तब नाविक और नौका में
फिर जाने क्यों ललकार हुआ

जब पतछड़ ने मुह मोड़ लिया
और हवा ने रास्ता छोड़ दिया
फिर नाविक के हौसले ने
नौका का मुख ही मोड़ दिया

पतवार संभाला हाथों से
लक्ष्य निशाना साध लिया
नौका पार करने को
बस ठान लिया तो ठान लिया

तुम भी अपना लक्ष्य को पहचानो
अंदर की ताकत को जानो
अपना लक्ष्य का चुनाव करो
सारे बाधा को पार करो

About the Author

(A short bio about yourself, your journey as a poet, and any previous works or achievements.)

Acknowledgments

(A section to thank those who supported you in your poetry journey.)